**ओ३म्**

 **‘राम के** **मित्र महावीर हनुमान का आदर्श व अनुकरणीय जीवन’**

**-मनमोहन कुमार आर्य, देहरादून।**

आज आर्य धर्म व संस्कृति के महान आदर्श आजन्म ब्रह्मचारी महावीर हनुमान जी की जयन्ती है। मर्यादा पुरुषोत्तम श्री रामचन्द्र जी के साथ महावीर हनुमान जी का नाम भी इतिहास में अमर है व रहेगा। उनके समान ब्रह्मचर्य का पालन करने वाला, स्वामी-भक्त, अपने स्वामी के कार्यों को प्राणपण से पूरा करने वाला व सभी कार्यों को सफल करने वाला, आर्य धर्म व संस्कृति का उनके समान विद्वान व आचरणीय पुरुष विश्व इतिहास में अन्यतम है। वीर हनुमान जी ने श्रेष्ठतम वैदिक धर्म व संस्कृति का वरण कर उसका हर पल व हर क्षण पालन किया। वह आजीवन ब्रह्मचारी रहे। रामायण एक प्राचीन ग्रन्थ होने के कारण उसमें अन्य ग्रन्थों की भांति बड़ी मात्रा में प्रक्षेप हुए हैं। कुछ प्रक्षेप उनके ब्रह्मचर्य जीवन को दूषित भी करते हैं जबकि हमारा अनुमान व निश्चय है कि उन्होंने जीवन भर कठोर व असम्भव ब्रह्मचर्य व्रत का पूर्ण रूप से पालन किया था। वैदिक धर्म व संस्कृति की यह विशेषता रही है कि इसमें महाभारतकाल से पूर्व काल में बड़ी संख्या में आदर्श राजा, वेदों के पारदर्शी व तलस्पर्शी गूढ़ विद्वान, ऋषि, मुनि, योगी, दर्शन-तत्ववेत्ता, आदर्श गृहस्थी, देश-धर्म-संस्कृति को गौरव प्रदान करने वाले स्त्री व पुरुष उत्पन्न हुए हैं जिनमें वीर हनुमान जी का स्थान बहुत ऊंचा एवं गौरवपूर्ण है।

 हनुमान जी वानरराज राजा सुग्रीव के विद्वान मन्त्री थे। वानरराज बाली व सुग्रीव भाईयों के परस्पर विवाद में धर्मात्मा सुग्रीव को राजच्युत कर राजधानी से निकाल दिया गया था। वह वनों में अकेले विचरण करते थे। वहां उनका साथ यदि किसी ने दिया तो वीर हनुमान जी ने दिया था। धर्म पर आरूढ़ हनुमान जी ने सत्य व धर्म का साथ दिया व राजसुखों का त्याग कर वनों के कठोर जीवन को चुना। राम वनवास के बाद जब रावण ने महारानी सीता जी का हरण किया तो इस घटना के बाद श्री रामचन्द्र जी की भेंट पदच्युत राजा सुग्रीव के मंत्री हनुमान से होती है। राम व हनुमान जी में परस्पर संस्कृत में संवाद होता है। रामचन्द्र जी हनुमान की संस्कृत के ज्ञान व भाषा पर अधिकार व व्यवहार करने की योग्यता से प्रभावित होते हैं और अपने भ्राता लक्ष्मण को कहते हैं कि यह हनुमान वेदों का जानकार व विद्वान है। इसने जो बाते कहीं हैं, उसमें उसने व्याकरण संबंधी कोई साधारण सी भी भूल व त्रुटि नहीं की। इस घटना से हनुमान जी की बौद्धिक क्षमता व राजनैतिक कुशलता आदि का ज्ञान होता है। हनुमान जी की प्रशंसा मर्यादा पुरुषोत्तम श्री रामचन्द्र जी ने स्वयं अपने श्रीमुख से वाल्मीकि रामायण में की है।

 हनुमान जी का मुख्य कार्य महारानी सीता की खोज व राम रावण युद्ध में रामचन्द्र जी की सहायता व उनकी विजय में मुख्य सहायक होना भी है। उन्होंने हजारों वर्ष पूर्व लंका पहुंचने के लिए समुद्र को तैर कर पार किया था, ऐसा अनुमान होता है। साहित्यकार व कवि कई बार तैरने को भी भावना की उच्च उड़ान में घटनाओं को अलंकारिक रूप देकर उसे लाघंना कह सकते हैं। यह उनका वीरता का अपूर्व व महानतम उदाहरण है। वह लंका पहुंचे और माता सीता से मिले और उन्हें पुनः रामचन्द्र जी के दर्शन व उनसे मिलने के लिए आश्वस्त किया। उन्होंने लंका में अपने बल का परिचय भी दिया जिससे यह विदित हो जाये कि राम अविजेय हैं और लंका का बुरा समय निकट है। हनुमान जी रावण के दरबार में भी पहुंचे और वहां रामचन्द्र जी का सन्देश सुनाने के बाद अपनी वीरता व पराक्रम के उदाहरण प्रस्तुत किये। लंका के सेनापति, सैनिक व रावण के परिवार के लोग चाह कर भी उनको बन्दी बना कर दण्डित नहीं कर पाये और वह सकुशल लंका से बाहर आकर, माता सीता से मिलकर रामचन्द्र जी के पास सकुशल पहुंच गये और उन्हें माता सीता के लंका में जीवित होने का समाचार दिया। यह कितना बड़ा कार्य हनुमान ने किया था, यह रामचन्द्र जी ही भली भांति जानते थे। इस कार्य ने रामचन्द्र जी को उनका एक प्रकार से कृतज्ञ बना दिया था। इसके बाद राम-रावण युद्ध होने पर भी समुद्र पर पुल निर्माण और लक्ष्मण जी के युद्ध में घायल व मूच्र्छित होने पर उनके लिए वहां से हिमालय पर्वत जाकर संजीवनी बूटी लाना हनुमान जी जैसे वीर व विचारशील मनीषी का ही काम था। बताया जाता है कि वह उड़कर हिमालय पर्वत पर पहुंचे थे। ऐसा होना सम्भव नहीं दीखता। यह सम्भव है कि उन्होंने अवश्य किसी विमान की सहायता ली होगी अन्यथा वह हिमालय शायद न पहुंच पाते। मनुष्य का बिना किसी विमान आदि साधन के उड़कर जाना असम्भव है। साधारण भाषा में आज भी विमान में यात्रा करने वाला व्यक्ति कहता है मैं एयर से अमुक स्थान पर गया था। इसी प्रकार विमान के लिए उड़ कर जाने जैसे शब्दों का प्रयोग रामायण में किया गया है। आज ज्ञान व विज्ञान उन्नति के शिखर पर हैं परन्तु आज भी संसार के 7 अरब मनुष्यों में से किसी को उड़ने की विद्या व कला का ज्ञान नहीं है। अतः यही स्वीकार करना पड़ता है व स्वीकार करना चाहिये कि हनुमान जी किसी छोटे स्वचालित विमान से हिमालय पर आये और संजीवनी आदि इच्छित औषधियां लेकर वापिस लंका पहुंच गये थे। यह भी वर्णन कर दें कि प्राचीन साहित्य में इस बात का उल्लेख हुआ है कि उन दिनों निर्धन व्यक्तियों के पास भी अपने अपने विमान हुआ करते थे। सृष्टि के आरम्भ काल में भी लोग विमान से एक स्थान से दूसरे स्थान पर जाते थे और उन्हें जहां जो स्थान अच्छा लगता था, वह वहीं जाकर अपने परिवारों व इष्ट मित्रों सहित बस जाते थे। इसी प्रकार से सारा संसार यूरोप व अरब आदि के देश बसे हंै। यह तथ्य है कि आदि सृष्टि भारत के तिब्बत में हुई थी। सृष्टि के आदि काल में नेपाल, तिब्बत व चीन आदि देश नहीं थे। तब सारा ही आर्यावर्त्त था।

 माता सीता के प्रति हनुमान जी का माता-पुत्र की भांति अनुराग व प्रेम था। विश्व इतिहास में यह माता-पुत्र का संबंध भी विशेष महत्व रखता है। आज संसार के सभी देश व उनके नागरिक हनुमान जी के चरित्र की इस विशेषता से बहुत कुछ सीख सकते हैं। **‘‘पर दारेषु मात्रेषु”** अर्थात् अन्य सभी स्त्रियां माता के समान होती हैं। यह भावना वैदिक संस्कृति की देन है। यह वैदिक धर्म व संस्कृति का गौरव भी है। आदर्श को अच्छा मानने वालों को इसी स्थान पर आना होगा अर्थात् वैदिक धर्म व संस्कृति को अंगीकार करना होगा।

हमारे पौराणिक भाई हनुमान जी को वानर शब्द के कारण बन्दर समझते हैं जो कि उचित नहीं है। हनुमान जी हमारे जैसे ही मनुष्य थे तथा वनों में रहने के कारण वानर कहलाते थे। आजकल भारत में इसका एक प्रदेश नागालैण्ड है जिसके निवासी नागा कहलाते हैं। देश व विश्व में कोई उनकी सांप के समान आकृति नहीं बनाता। इसी प्रकार इंग्लिश, चीनी, जर्मनी, फ्रांसीसी आदि नागरिक हैं। यह सब हमारे जैसे ही हैं और हम उनके जैसे। इसी प्रकार से हनुमान व सुग्रीव आदि सभी वानर हमारे समान ही मनुष्य थे। उनमें से किसी की पूंछ नहीं थी। उनकी पूंछ मानना व चित्रों में चित्रित करना बुद्धि का मजाक व दिवालियापन है। वैदिक धर्मी मननशील व सत्यासत्य के विवेकी लोगों को कहते हैं। अतः वानर हनुमान जी बिना पूछ वाले राम, लक्ष्मण व अन्य मनुष्यों के समान ही मनुष्य थे, यह विवेकपूर्ण एवं निर्विवाद है। इस पर विचार करना चाहिये और इसी विचार व मान्यता का सभी पौराणिक भाईयों को अनुसरण भी करना चाहिये। हनुमान जी की पूंछ मानने वाले हमारे भाई इक्कीसवीं सदी में दूसरों का मजाक न बने और अपने महापुरुषों का अपमान न करायें, यह हमारी उनसे विनम्र प्रार्थना है। इसी के साथ इस संक्षिप्त लेख को विराम देते हैं और भारतीयों व विश्व के आदर्श हनुमान जी को स्मरण कर उनसे प्रेरणा ग्रहण कर उनके पथ का अनुसरण करने का प्रयास करने का व्रत लेते हैं।

-**मनमोहन कुमार आर्य**

**पताः 196 चुक्खूवाला-2**

**देहरादून-248001**

**फोनः09412985121**

**ओ३म्**

**‘महर्षि दयानन्द को राष्ट्रकवि रवीन्द्रनाथ**

**टैगोर** **की भाव-भरित श्रद्धांजलि’**

**-मनमोहन कुमार आर्य, देहरादून।**

महर्षि दयानन्द ने वेद प्रचार की अपनी यात्राओं में बंगाल वा कोलकत्ता को भी सम्मिलित किया था। वह राष्ट्रकवि श्री रवीन्द्रनाथ टैगोर के पिता श्री देवेन्द्रनाथ टैगोर व उनके परिवार से उनके निवास पर मिले थे। आपका जन्म कोलकत्ता में 7 मई सन् 1861 को हुआ तथा मृत्यु भी कोलकत्ता में ही 7 अगस्त सन् 1941 को हुई। आप अपनी विश्व प्रसिद्ध रचना **‘‘गीतांजलि”** के लिए सन् १९१३ में सर्वोच्च साहित्यिक सम्मान नोबेल पुरुस्कार से सम्मानित थे। श्री टैगोर ने देश व समाज में जो उच्च स्थान प्राप्त किया, उसके कारण उनके ऋषि दयानन्द विषयक विचारों व स्मृतियों का महत्व निर्विवाद है। गुरुदेव रवीन्द्रनाथ टैगोर द्वारा सन् 1937 में लाहौर के डी.ए.वी. कालेज के सभागार में ऋषि दयानन्द को भावपूर्ण श्रद्धांजलि दी थी। ऐतिहासिक व गौरवपूर्ण होने के कारण हम गुरुदेव के शब्दों को प्रस्तुत कर पाठकों को भेंट कर रहे हैं।

गुरुवर रवीन्द्रनाथ टैगोर ने कहा था-**‘‘जीवन में कुछ घटनायें ऐसी घट जाती हैं जो अपना सम्पूर्ण उस क्षण उद्घाटित न करके भी हृदय पर अमिट छाप छोड़ जाती है। ऐसी ही एक घटना उनके (गुरुदेव के) जीवन में तब घटी, जब महान् ऋषि दयानन्द कोलकाता में हमारे घर पर पधारे थे। ऋषिवर दयानन्द के गम्भीर पण्डित्य की कीर्ति तब तक हमारे कर्ण गोचर हो चुकी थी। हम यह भी सुन चुके थे कि वेद मन्त्रों के आधार पर वे मूर्तिपूजा का खण्डन करते हैं। मैं उन महान् विद्वान के लिए लालायित था, पर तब तक इस बात का हमें आभास नहीं था कि निकट भविष्य में वे इतने महान् व्यक्तित्व के रूप में हमारे सामने प्रसिद्धि पायेंगे। मेरे भाई ऋषि जी से वेदार्थ में विचार-विमर्श में निरन्तर तल्लीन थे। उनका वार्तालाप गहन अर्थ प्रणाली तथा आर्य संस्कृति पर चल रहा था। मेरी आयु तब बहुत छोटी थी। मैं चुपचाप एक ओर बैठा था, परन्तु उस महान् दयानन्द का साक्षात्कार मेरे हृदय पर एक अमिट छाप छोड़ गया। उनके मुखमण्डल पर असीम तेज झलक रहा था। वह प्रतिभा से दीप्त था। उनके साक्षात्कार की वह अक्षुण्ण स्मृति अब तक मैं अपने मन में संजोय हुए हूं। हमारे सम्पूर्ण परिवार के हृदय को आनन्दित कर रही है। उनका सन्देश उत्तरोत्तर मूर्त रूप लेता गया। यह सन्देश देश के एक कोने से दूसरे कोने तक गूंज उठा। आश्चर्य तो इस बात पर होता है कि भारतीय गगन में घटाटोप घिरे वे संकीर्णता व कट्टरता के बादल देखते ही देखते छितरा कैसे गये?’’**

प्रा. राजेन्द्र जिज्ञासु आर्यसमाज के वयोवृद्ध एक प्रसिद्ध विद्वान, साहित्यकार एवं धर्म-प्रचारक हैं। आपने विपुल आर्य-सामाजिक साहित्य की रचना की है। परोपकारी मासिक पत्रिका में आप **‘कुछ तड़प कुछ झड़प’** शीर्षक से एक लेखमाला चलाते हैं। इस पत्रिका के नये अंक में आपने गुरुवर रवीन्द्र जी का उपर्युक्त प्रसंग प्रस्तुत किया है। इसकी महत्ता को विचार कर हम इसे पाठकों के लाभार्थ प्रस्तुत कर रहे हैं। जिज्ञासु जी के अनुसार ऋषि दयानन्द भक्त श्रीयुत् हरविलास सारदा आदि सब पुराने विद्वानों ने कविवर ठाकुर रवीन्द्रनाथ जी की ऋषि के प्रति भावपूर्ण श्रद्धांजलि अपने ग्रन्थों व लेखों में दी है। इस श्रद्धांजलि का आर्य पत्रकार पं. भारतेन्द्रनाथ की कृपा से पुनरुद्धार हो गया। कवि गुरु के ये उद्गार जन-ज्ञान साप्ताहिक के 18 अप्रैल, 1976 के अंक में प्रकाशित हुए थे। सन् 1935 के उन दिनों में यह श्रद्धांजलि ट्रिब्यून आदि दैनिक पत्रों में भी प्रकाशित हुई थी। हम ऋषिभक्त श्रद्धेय जिज्ञासु जी व परोपकारी पत्रिका का इस ऐतिहासिक प्रसंग को प्रस्तुत करने के लिए आभार व्यक्त करते हैं। हम आशा करते हैं कि पाठक इसे पढ़कर आनन्द प्राप्त करेंगे।

 **-मनमोहन कुमार आर्य**

**पताः 196 चुक्खूवाला-2**

**देहरादून-248001**

**फोनः09412985121**